International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

बाल गंगाधर तिलक के स्वराज्य संबंधित विचार: एक दृष्टि

डॉ. अजय कुमार
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, गुरुनानक खालसा कॉलेज, करनाल।

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के अग्रणी प्रणेताओं में बाल गंगाधर तिलक का नाम, सर्वोपरि माना जाता है। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग, तपस्या और बलिदान की ओजपूर्ण गाथा है। तिलक में राष्ट्रीय आन्दोलन में एक नई चेतना का संचार किया और राजनीतिक चेतना को बुध्दिजीवियों के वाणी- विलास की अपेक्षा जनमानस के स्वाभिमान और राष्ट्र गौरव की अनुभूति का पर्याय बना दिया। उद्यम देशभक्ति, मातृभूमि की सेवा की उत्कृष्ट लालसा होती थी। का तिलक प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने वेदों, उपनिषदों और अन्य प्राचीन भारतीय ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने "दि आर्कटिक होम इन ही वेदाज " , "ओरामन वैदिक कोनोलॉजी एवम् वेदांग ज्योतिष,," आदि ग्रन्थों की रचना की। उनका ग्रन्थ 'गीता रहस्य' भारतीय दर्शन में उनकी मौलिक अन्तर्दृष्टि का स्पष्ट प्रमाण है। केसरी मराठा' के सम्पादक के रूप में तिलक ने. सरकारी नौकरशाही की दमनकारी नीति के विरुद्ध अभियान छेड़ दिया। इन दोनों पत्रों में प्रकाशित और लेख जनता को जागरण और स्वाभिमान का संदेश देते थे। (1)

जनता में प्राचीन गौरव व संस्कृति के प्रति आत्मीयता का भाव विकसित करने के उद्देश्य से तिलक ने "गणपति उत्सव" को एक नया स्वरूप प्रदान किया और प्राचीन जननायकों के प्रति सम्मान का भाव विकसित करके जनता के स्वाभिमान को जागृत करने के उद्देश्य से उन्होंने "शिवाजी उत्सव" प्रारम्भ किया। वे गणपति उत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय स्वाभिमान चेतना और सामाजिक एकता स्थापित करना चाहते थे। शिवाजी उत्सव का प्रयोजन भी जनता में जागृति का संदेश प्रसारित करना था। तिलक का मानना था कि ऐसा राष्ट्र जो अपने जननायकों का सम्मान करना नहीं जानता, कभी प्रगति नहीं कर सकता। तिलक की मान्यता थी कि अपने प्राचीन जननायकों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करके जनता में आत्म-बलिदान और राष्ट्र के हितों के लिए संघर्ष करने की प्रवृति अंकुरित होती है। तिलक ने ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीति के विरुद्ध जनआंदोलन की आवश्यकता को समझा था। उन्होने स्वराज्य, स्वदेशी राष्ट्रीय शिक्षा एवम् बहिष्कार के चार अस्त्रों को अपनाते हुए रणनीतिक प्रयास किया। तिलक का व्यक्तित्व और विचार, संस्कारों व पारिवारिक वातावरण, भारतीय व. पाश्चात्य दर्शन के गहन अध्ययन तथा युग – प्रवर्तक म्हापुरुषों से प्रभावित व संस्कार से प्रेरणास्पद आदशों निर्धारित हुए थे। चारित्रिक दृढता , देशभक्ती और आदर्श के लिए कष्ट सहन करने की तत्परता तिलक को शिवाजी जैसे ऐतिहासिक चरित्रों की गौरव- गाथा से अत्याधिक प्रभावित हुए, जिन्होंने स्वाभिमान और स्वातंत्र्य की रक्षा के लिए अनेक कष्ट सहे और अद्भुत संगठनात्मक क्षमता, साहस और संकल्प का उदाहरण

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रस्तुत किया। देश को विद्रोही शासन से मुक्त कराने के लिए कष्ट सहने की तत्परता, विदेशी शासन के विरुद्ध जनता को संगठित करने की आवश्यकता की अनुभूति तथा त्याग – वृत्ति तिलक के व्यक्तित्व पर शिवाजी जैसे चरित्र के प्रभाव के स्पष्ट प्रमाण थे।

गीता की आध्यात्मिकता व कर्मयोग को उन्होंने अपनी कार्यशीलता का आधार बनाया और यह आवश्यकता प्रतिपादित की कि अन्याय का विरोध करने और अधर्म से संघर्ष करने के कार्य को लोग ईश्वर की भक्ति के समान ही समर्पित भावना से सम्पन्न करें। आत्मा की अमरता के गीता के संदेश से प्रेरित होकर वे विचार और कर्म दोनों स्तरों पर यह प्रतिपादित करने को हुए कि देश की सेवा के यज्ञ मे यदि व्यक्ति अपने प्राणों की आहुति भी दे दे तो कोई हानि नहीं होगी क्योकि इससे उसके नशवर शरीर का ही अन्त होगा, अनश्वर आत्मा का नहीं।गीता निष्काम कर्म के संदेश से प्रेरित हो, उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि देश सेवा का ना कार्य व्यक्तिगत लाभ अथवा प्रतिष्ठा की लालसा से नहीं अपितु नि:स्वार्थ भावना से किया जाना चाहिए।

तिलक व्यक्ति के व्यक्तित्व पर बाध्यकारी नियन्त्रण का अनैतिक मानते थे। स्वतंत्रता की उनकी धारणा, उनकी आध्यात्मिकता आस्था से ही निर्धारित हुई थी। भारतीय अदैतवाद मे गहरी आस्था के फलस्वरूप तिलक सभी मनुष्यों को निरपवाद परमात्मा का अंश स्वीकार करते थे। इस प्रकार इनके लिए व्यक्ति की स्वतंत्रता का निषेध, ईश्वर की सत्ता के निषेध के समान ही आपत्तिजनक माना जाता था। तिलक की स्वराज्य की धारणा मौलिक और सकारातमक थी। वे विदेशी आधिपत्य से मुक्ति को स्वराज्य का पहला सोपान स्वीकार करते थे। तिलक के मत में विदेशी शासन स्वराज्य की अनुभूति के मार्ग बड़ी बाधा थी। उनके अंनुसार व्यक्ति के लिए स्वराज्य का अथॉ था, व्यक्ति को स्वधर्म के पालन की स्वतंत्रता । वही एक राजनीतिक प्रणाली के रूप मे स्वराज्य का अर्थ था- धर्मराज्य की स्थापना। स्वराज्य से उनका आशय था कि ऐसी शासन प्रणाली की स्थापना जो पूरी तरह जनता के हितों के प्रति समर्पित हो, जिसमें राजकीय शक्ति जनता के स्वाभिमान के अपहरण का माध्यम ना बनें अपितु उसका उपयोग इसी नीति से किया जाए कि जनता समझ सके कि वह शासित नहीं है। अपितु शासन उसकी सहमति और अनुमति से चलाया जा रहा है । सारतः तिलक के स्वराज्य को धारणा में सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक, आर्थिक आदि समस्त प्रश्नों कके निर्धारण मे जनता की सक्रिय भागीदारी व सार्थक सहमति आवश्यक थी। तिलक – का स्वराज्य किसी विदेशी या स्वदेशी शासक के हाथों मे शाक्तियों का अमर्यादित केंद्रीकरण को नहीं अपितु शासन के पूर्णतः जनहित के प्रति समर्पण और शासन के कार्य पर जनता के निर्णायक नियंत्रण के भाव को समाहित करता था। उनके स्वराज्य का मम, राज्य की शक्ति पर, जागृत लोक शक्ति के प्रभावी नियन्त्रण में निहित था।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

तिलक ने भारतीय जनता के लिए पूर्ण स्वाधीनता की आवश्यकता प्रतिपादित की किन्तु वे अव्यवहारीक आदर्शवादी नहीं थे। उन्होने व्यवहारिक परिस्थितियो के अनुरूप स्वराज्य की धारणा का ऐसा रुपान्तरण कर दिया कि उनकी मूल भावना को सुरक्षित रखते हुए वे उसे अधिक यथाथपरक बना सके। उन्होने 1916 में बेलगांव में एक भाषण मे कहा कि - "स्वराज्य से हमारा आशय है कि हमारे मामलो का प्रबंध हमारे हाथों में हो।(2) मै जिस स्वराज्य की मांग कर रहा हू वह केवल हिन्दुओं के लिए , मुसलमानो के लिए अथवा किसी वर्ग - विशेष के लिए नहीं होगा, वह समस्त भारतीय जनता के लिए होगा। भारतीय जनता की समस्याओं का समाधान करने के लिए एक ही औषधि है- वास्तविक सत्ता । जब यह औषधि हमें प्राप्त हो जाएगी, तब हममे आपस में कोई मतभेद भी होगे, तो हम उन्हें स्वयं सुलझाने मे समर्थ होंगे।" (3) उन्होंने उदारवादियों के साधनो अनुनय आग्रह और प्रतिरोध की निरर्थकता और प्रभावहीनता पर कराक्ष करते हुए कहा प्रार्थना, प्रसन्न करना और प्रतिरोध से कुछ नही होगा जब तक कि इनके पीछे ठोस शक्ति ना हो।")4(उन्होंने कहा – "प्रतिवेदनों से कुछ नहीं होगा, हमें अपनी शाक्तयों को संगठित करना होगा ताकि जब हम शासकों के समक्ष अपनी मांगे लेकर उपस्थित हो तो वे उन्हें ना मानने का साहस न कर सकें।"(5)

तिलक ने स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और निष्क्रिय प्रतिरोध को महत्वपूर्ण मानते हुए इन्हें ब्रिटिश सता के विरुद्ध राजनीतिक आन्दोलनों के साधनों के रूप में अपनाएं जाने पर बल दिया। स्वदेशी विचार. आंन्दोलन का एक स्वरूप मात्र नहीं था अपितु राष्ट्र की आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और विदेशी प्रभाव से मुक्ति का प्रतीक भी था। स्वदेशी का आथिर्क महत्व इस तथ्य में निहित था कि इसके द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था का पुनर्निमाण किया जाना सम्भव था। स्वदेशी के नैतिक पक्ष को भी तिलक ने महत्वपूर्ण माना। उनका दृढ मत था कि स्वदेशी को अपनाने से भारतीयों मे स्वाभिमान का भाव विकासित होगा तथा वे विदेशी निर्भरता से मुक्त होगें। आत्मनिर्भरता व स्वावलम्बी भारत की नींव मजबूत होगी । लघु और कुटीर उद्योगो को अधिकाधिक प्रोत्साहन से बेरोजगारी व भूखमरी की समस्या का समाधान संभव होगा। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के द्रवारा भावनात्मक और आर्थिक दोनों स्तरों पर ब्रिटिश आधिपत्य से संक्रिय प्रतिरोध का भाव व्यक्त होता था। उनकी मान्यता थी कि स्वदेशी में स्वावलम्बी व आत्मनिर्भरता की इच्छा भाव व्यक्त होता है और बहिष्कार में दूसरे पक्ष के प्रति विदेष और रोष का भाव व्यक्त होता है। (6)

तिलक ने पूना के एक भाषण में कहा-- "तुम्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि तुम उस शक्ति के स्वयं एक प्रभावशाली घटक हो जिसके दवारा भारत में प्रशासन चलता है। तुम स्वयं ऐसा, तत्व हो जिसके द्वारा प्रशासिनिक संयंत्र को सुचार रूप से चलाया जाता है। यद्धपि तुम उपेक्षित हो, किन्तु यदि तुम्हें अपनी

शाि्क्त का आभास हो जाये, तो तुम प्रशासन का चलना असम्भव बना सकते हो। तुम्हीं डाक और तार की व्यवस्था करते हो, तुम्हीं राजस्व एकत्रित करते हो, वास्तव मे चाहे अधीनस्थ रूप में ही सही तुम्हीं प्रशासन कि समस्तः गतिविधियों को सम्पन्न करते हो। तुम्हें यह विचार करना चाहिए जि तुम इस प्रकार प्रशासनिक गतिविधियो में घसीटे जाने की अपेक्षा; अपनी शक्ति का प्रयोग अपने राष्ट्र के लिए ही करो।"(7)

वे विदेशी बहिष्कार को एक प्रभावशाली अस्त्र मानते थे और उनकी सफलता के प्रति पूर्ण आश्वात थे। उनका दृढ मत था कि यदि बहिष्कार को एक व्यापक आदोलन के रूप में स्वीकार कर लिया जाए तो ब्रिटिश सत्ता से भारत की मुक्ति के लिए अस्त्र-शस्त्रों की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। (8) एक अन्य साधन के रूप में तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा को महत्वपूर्ण माना। तिलक ने राष्ट्रीयता के विचार को सजीव रूप प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा को अभिन्न अंग माना। उनकी मान्यता थी कि कि राष्ट्रीय शिक्षा के द्वारा ही जनता में राष्ट्रीय एकता की भावना का संचार किया जा सकता है । तिलक के अनुसार शिक्षा का अर्थ कोरा अक्षर-ज्ञान नहीं है अथवा सूचनाओं का संग्रह मात्र नहीं है। शिक्षा वह ﷲ माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्तियो के व्यक्तित्व का निर्माण होता है।(9) उनमे स्वाभिमान और आत्म निर्भरता के भाव जागृत होते है। शिक्षा के प्रति तिलक का द्वाष्टकोण व्यावसायिक नहीं था। वे शिक्षा को राष्ट्र- निर्माण के प्रभावशाली भावनात्मक साधन के रूप में विकासित करना चाहते थे। (10) वे भारतीय संस्कृति की सुदृढ़ नींव पर एक न्यायनिष्ठ और सुदृढ सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करनाचाहते थो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मधुकर, श्याम प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, पृ० 247
२. तिलक राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज, पृ०152
3. उपर्युक्त पृ. 169-70..
५. उपर्युक्त, पृ. 25
5. उपर्युक्त, पृ. 45
6. उपर्युक्त , पृ०39
7 जे. पी. सूद - मेन करेन्ट्स आफै मॉडर्न इण्डियन पॉलिटिकल थाट पृ० 412-413.
8. वीपी वर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चितंन, पृ०252
9 तिलक, पूर्वाक्त, पृ. 73 तिलक,
10 टी. एल. शे- दी लीगेसी नॉफ लोकमान्य, पृ० 63,